1 प्रकृति का संदेश

पठन से पूर्व

प्रकृति में जितनी भी वस्तुएँ हैं, सभी हमें कुछ-न-कुछ सीख देती हैं। सजीव ही नहीं, निर्जीव वस्तुएँ भी हमें जीने की राह बताकर हमारा मार्गदर्शन कर सकती हैं। पृथ्वी, पहाड़, नदियाँ, सागर, आकाश, चाँद, सितारे आदि प्राकृतिक वस्तुओं के गुणों को ध्यान में रखकर हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

पाठ-परिचय

यह पाठ एक प्रेरणादायी कविता है, जिसके माध्यम से कवि सोहनलाल द्विवेदी जी हमें प्रकृति के संदेश को ग्रहण करने की प्रेरणा दे रहे हैं। पर्वत, सागर, तरंग, पृथ्वी और नभ हमें ऐसा संदेश दे रहे हैं, जिससे हमारे भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

चर्चा करें

बच्चों से पूछें कि अपने चारों ओर की वस्तुओं से हम क्या-क्या सीख सकते हैं। उदाहरणस्वरूप पेड़ हमें परोपकार करना सिखाते हैं, चींटियाँ हमें परिश्रमशील बनने की सीख देती हैं। इसी तरह पर्वत, नदी, पृथ्वी, आकाश आदि भी हमें कुछ ऐसी सीख देते हैं।

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है,
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो-भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

–सोहनलाल द्विवेदी

मौखिक प्रश्न

1. ऊँचा बनने की बात कौन कहता है? पर्वत
2. अपने मन में उमंग भरने के लिए कौन कहता है? सागर
3. पृथ्वी क्या कहती है? धैर्य रखने को
4. 'सारा संसार ढक लेने' का क्या अर्थ है?

संसार से अपना नाम रोशन करना

पाठ 1 प्रकृति का संदेश (कविता)

प्र.1 कठिन शब्द तीन-तीन बार लिखो।

1 शीश
2 सागर
3 तरंग
4 मृदुल
5 उमंग
6 नभ
7 धैर्य
8 प्रकृति
9 संदेश
10 भार

प्र.2 कविता लिखकर चित्र बनाना है।

प्र.3 शब्दों के अर्थ लिखो।

शब्द	अर्थ
प्रकृति	कुदरत
संदेश	सूचना
शीश	मस्तक
सागर	समुद्र
सरल	बहनेवाला पदार्थ
तरंग	लहर
मृदुल	कोमल
उमंग	उत्लास
धैर्य	धीरज
भार	बोझ
नभ	आकाश

(P.T.O)